श्री प्रत्यंगिरा दंडकं

श्री प्रत्यंगिरा दंडकं

ॐ नमः प्रत्यंगिरायै||

प्रार्थना –
निवसति करवीरे सर्वदा या श्मशाने
विनतजनहिताय प्रेतरूढे महेशि |
हिमकर हिमशुभ्रां पंचवक्त्रां त्वमाद्यां
दिशतु दशभुजाया सा श्रियं सिद्धिलक्ष्मीः||

दंडकम् –
ऐं क्ष्रेम् | जय जय जगदंब प्रणत हरिहरहिरण्यगर्भ प्रमुख सुरमुकुट मंदारमाला परिमलदतिपटल वाचाल चरण पुंडरीकेषु पुंडरीकाक्ष प्रमुख कर कंबु विमल मंदाकिनी शरदेंदु कुंदारविंदसंदोह सुंदरशरीरप्रभे | जय जय महाकाळि कालनाशिनि समयचक्रे मेलापकाशिनि सिद्धिगणयोगिनी वीरविद्याधरी जननिकर मुनिकुरुंबिनी तुंबिनी कदंब किन्नरवाराध्यमाने कराळो विधाने सिद्धिलक्ष्मीप्रदे विरूपाक्षचक्षुसंवासे आनंदरसदायिके त्रिभुवननायिके स्फुरदनर्घमणि मुक्तबलीकलापमध्यस्थिता चक्षुत्रवाभरण झणझणायमान तरुवल्लरीवहल प्रभा पटल पालीकृत सकल दिङ्मंडल गंडस्थलोल्लसित रविशशिकुंडले पीत कठिन कुच कलश युगळांतनुवालकुलित नर मुंडावली मंडिते, चंडि रुधिरपानप्रमत्ते प्रेतकलोत्ताल वेताल करतालिका ताडन तांडव प्रमुखा नट डाकिनी चक्र चंक्रमण चकितविताय चमत्कार विस्फुरित पिशाच प्रलय चित्कार ध्वनि मुखरकनवीर श्मशानाधिनिवासिनी रुद्रस्कंधाधिरुढे, षडाधारमध्यारविंद मंदिरोदरांकुचोन्नत प्रसूतजगाममनायमानकुल कुंडलिनी शक्तिप्रभा प्रदीपिका सखमनासवलेरिगमदाकाश शशिमंडलामृतधारा पयोनिधिगमन मानसैरुदित हसैरखिल साधकैरविभाव्यते मातृकाचक्र संभाविते मृगांक कुंकुमागुरु मृगमदांगराग परिमलवासितावास मणिमंडपे खंडेंदु मंडितोरुजटाकलापकलित करवीरोदार करहार कनक केतकी नवमालिका तालिका मदयंतिका माधवी विविध गंधबंधुर गंधवाह वहदरुणसवनाचले ध्यानाकार चकित त्रिनयनाचले ॐ जय जय जगज्जननि जय जय ||1||

ख्रें ऐम् | जय जय नवाक्षरी नवत्यधिकशताक्षर मंत्रमालाधिदैवते काळि कात्यायनि कपालिनि नररुधिरवशापिशित परिपूर्ण कपाल करवाल त्रिशूल खट्वांग घंटा मुंड पाशांकुश वराऽभय शोभितकरे सुकरे बद्धवीरासने सिद्धेश्वरि सिद्धविद्याधरोरगेंद्रका ध्यायमानांघ्रि लयेशांभवावेश विभवे देवदेवि महादेवि अनाख्ये उमाख्ये सदापूर्णिमारख्ये लसत्तारकाख्ये अकाराक्षरदोस्फुरदंबराकारे महाव्योम्नि व्योमवामेश्वरी कुंडिके खेचरी गोचरी दिक्चरि शांबरी शक्ति चक्र क्रियेच्छाज्ञानरुप गुणातीत नित्यामृते नित्यभोगप्रदे संध्यावसानसमये लास्यविलासे टटमहानट जटाजूटापगारि रसदलंकार सकलकाव्यकलाकलाप वहलधी त्रिगुण प्रबंध विविधबंधु सुंदर कविता सिद्धिदे ऋद्धिदे बुद्धिदे ज्ञानदे मानदे शारदे षोडशाक्षराधिरूढ सकलसिद्धि चतुर्वर्गफलविधायिनि प्रणतजनहितकारिणि
जय जय जगदंब प्रत्यंगिरे ख्रें ऐं ओम् ||2||

मम सकलदुरितानपनुद अपनुद जय जय प्रत्यंगिरे जय जय जय हे ऐं ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं ख्रें ओम् ||3||

इति श्री प्रत्यंगिरा दंडकम् |